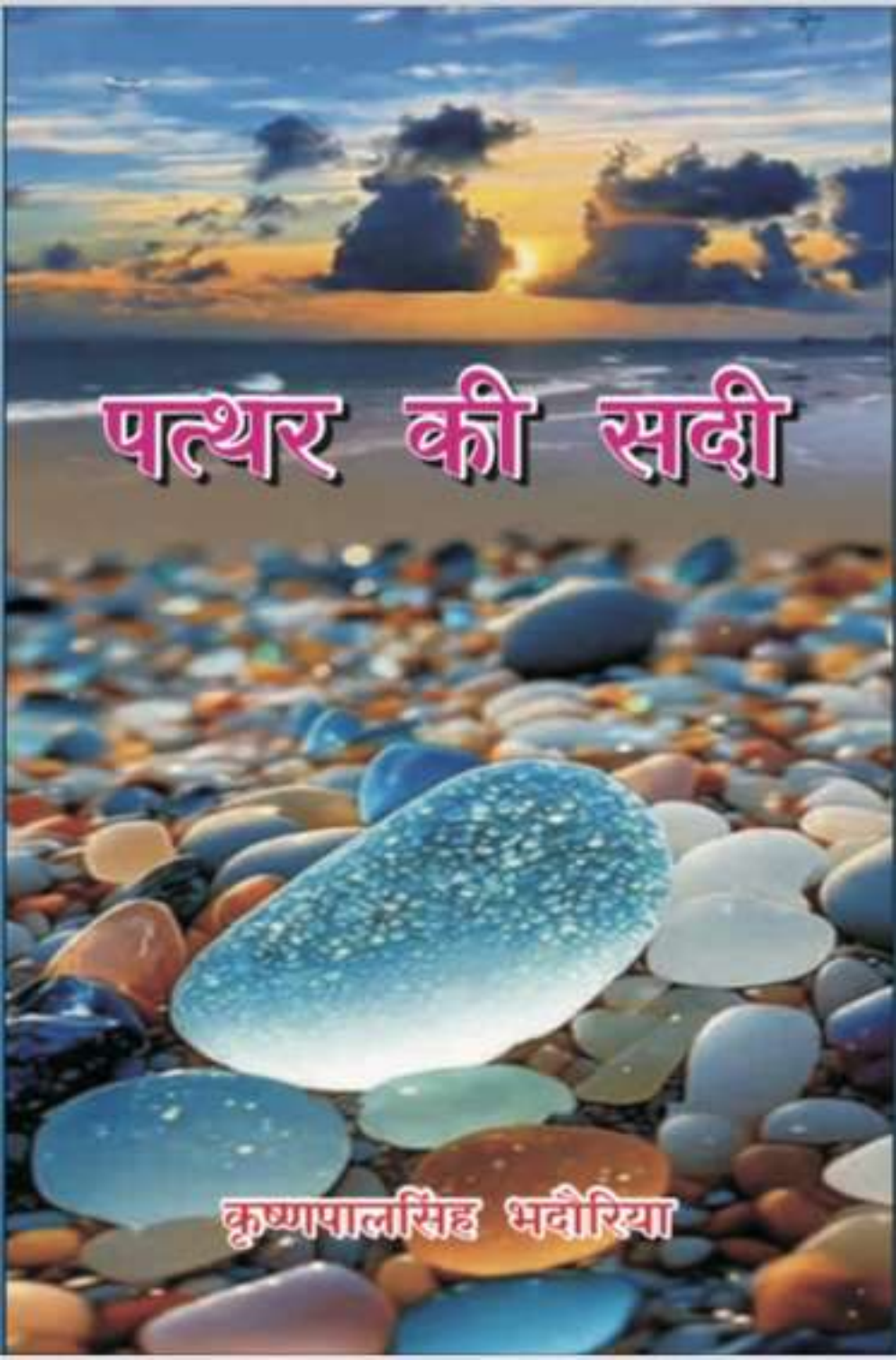
पत्थर की सदी
कृष्णपालसिंह भदौरिया

पत्थर की सदी

कृष्णपाल सिंह भदौरिया

प्रकाशक

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

अहमदाबाद

पत्थर की सदी

© कृष्णपाल सिंह भदौरिया

ISBN : 978-81-980943-0-8

मूल्य : 250

प्रथम संस्करण

आषाढ़, शुक्ल पक्ष, द्वितीया,

विक्रम संवत - 2081

27, जून, 2025

प्रकाशक

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

अहमदाबाद

टाइपसेटींग

स्टाइलस ग्राफिक्स

अहमदाबाद–380001

मुद्रक

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

A–202, क्रिश लक्ज़ूरिया

वस्त्राल रोड, अहमदाबाद–382418

(मो.) 9427622862

समर्पण

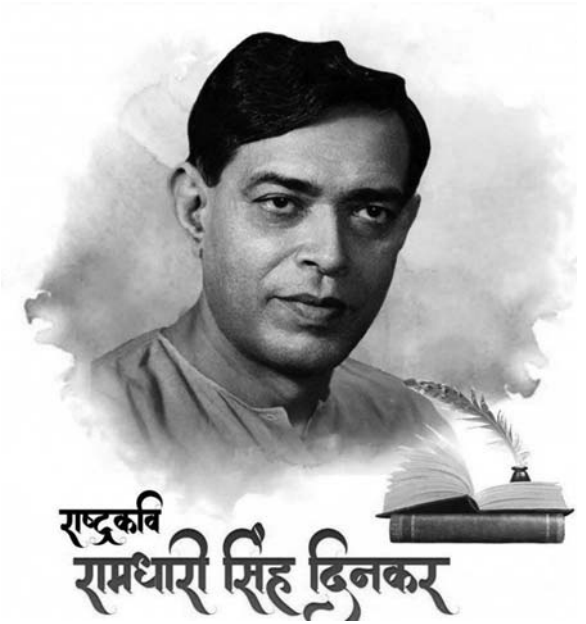

हिन्दी साहित्य के पुरोधा, मूर्धन्य साहित्यकार और राष्ट्रीय कवि

आदरणीय श्री रामधारी सिंह दिनकर को सादर समर्पित

अपनी बात

मेरी रचनाओं के प्रकाशन का यह छठा पुष्प है। एक समय था जब साइकिल की गति के साथ मन में भी एक धारा बहती रहती थी और वही धारा शब्दबद्ध होकर गीत, नवगीत, गीतिका (ग़ज़ल), छन्द मुक्त कविता का स्वरूप लेती रही। पद, प्रतिष्ठा और सामाजिक, साँस्कृतिक दायित्वों ने कवि का बहुत कुछ छीना है। विकास के रास्ते एक सर्जक की हत्या हुई है।

पुनः प्रिय विजय तिवारी को साधुवाद देना चाहूँगा कि अविस्मरण के अंधेरे में खो चुके उन क्षणों को फिर से जीवंत कर दिया है। मुझे कल्पना भी नहीं थी कि कभी मेरा लेखन प्रकाशित होगा। तुलसी के राम और पुराण : भारतीय इतिहास और संस्कृति का विश्वकोश के लिए डॉ. कौशिक मेहता का आभारी हूँ। शेष सभी के लिए प्रकाशन की सश्रम तपस्या के लिए प्रिय विजय को ही धन्यवाद देना चाहूँगा मेरे अज्ञात गुरुत्व के लिए शायद उनकी यह गुरु दक्षिणा है।

सुधी पाठकों से जानना चाहूँगा कि जो गीतिका के नाम से सूचीबद्ध रचनाएँ हैं क्या वे ग़ज़ल के मापदंडों पर खरी उतरती हैं। यदि हाँ तो किस हद तक?

संग्रह की भूमिका के लिए डॉ. सुभाष भदौरिया को धन्यवाद देना चाहूँगा फिर शिष्य का ऋणभार। रचनाएँ जो भी हैं, जैसी भी हैं आपकी कसौटी के लिए प्रस्तुत हैं।

-कृष्णपाल सिंह भदौरिया
404, देव सिद्धि फेबुला, सी. जी. रोड,
होटल प्रेसिडेंट के पास,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद
मोबाइल - 9426028100

प्रकाशकीय

आदरणीय गुरुवर श्री कृष्णपाल सिंह भदौरिया का प्रथम काव्य संग्रह **पिछले प्रहर** में फिर **नया पन्ना** और अब यह **पत्थर की सदी** लगातार तीन काव्य संग्रह प्रकाशित करने का सौभाग्य मुझे मिला। इसके लिए मैं ईश्वर का हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ। इन तीन काव्य संग्रहों में संग्रहीत रचनाएँ एकाएक किसी जादू से प्रकट नहीं हो गयीं हैं। सन् 1964 से अभी तक की अविरत अथक साहित्य साधना का परिणाम हैं ये संग्रह। पचपन - साठ वर्ष पुरानी डायरियों में से इन रचनाओं को चुन-चुनकर अत्यंत धैर्य और संभालते हुए प्रकाशन के लिए निकालना अत्यंत श्रम साध्य कार्य था। जैसे-जैसे इन रचनाओं को पढ़ता तो आनन्द और श्रेष्ठ, स्तरीय, गुणवत्तायुक्त रचनाओं के सागर में डूबता चला गया।

ये तीनों काव्य संग्रह हिन्दी साहित्य के प्रथम पंक्ति के सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रंथों में स्थान पाने के सर्वथा योग्य हैं, यह कहना सर्वथा समिचीन है। इन रचनाओं में भाषा सौष्ठव, विषय के अनुकूल उपमान और मिथकों का प्रयोग अत्यंत सराहनीय है। मानव मन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो भदौरिया जी से अछूता रहा हो। सुख-दुख, आशा-निराशा, परिवार के टूटते बिखरते संबंध, राजनैतिक विद्रूपता, मनुष्यता का क्षरण, आतंक का दहशत, मानव मन का वहशीपन सबकुछ भदौरिया जी की कलम से श्रेष्ठ साहित्यिकता से प्रकाशित और प्रस्तुत हुआ है।

इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने का कार्य मेरे परम मित्र डॉ. सुभाष भदौरिया और मुझे सौंपा गया। इससे हम दोनों ही मित्र अत्यंत प्रसन्नता महसूस कर रहे हैं। इस पुस्तक में दो तरह की रचनाएँ सम्मिलित हैं। प्रथम भाग में नवगीत और दूसरे भाग में गीतिकाएँ हैं। मेरे हिस्से में गीतिकाएँ हैं। मैं मूलतः गज़लकार हूँ इसलिए मेरे लिए तो यह और भी आनंद का विषय था कि मुझे गीतिकाओं पर लिखना है। उर्दू में लिखी जाने वाली ग़ज़लों में बहर, काफिया और रदीफ की बंदिश अत्यंत कठिन है। कई स्थानों पर बहर, काफिया और

रदीफ की बंदिश के कारण मानव-मन के कई सूक्ष्म भाव प्रस्तुत ही नहीं हो पाते हैं। उर्दू बहर की ग़ज़ल में काफिया और रदीफ में नुक्ते तक का ध्यान रखना पड़ता है। इसलिए कई दफा वह भाव जो शायर व्यक्त करना चाहता है वह नहीं हो पाता है। आज का युग नेट का युग है, जेट का युग है, तेज़ रफ़्तारी का युग है। समय के साथ-साथ परिवर्तन आवश्यक है। इसलिए इस परिवर्तन को और समय की मांग को स्वीकार करते हुए हिन्दी के मूर्धन्य और सर्वश्रेष्ठ गीतकार पद्मश्री गोपाल दास नीरज ने गीतिका का लेखन शुरू किया। ग़ज़ल की तर्ज पर किन्तु हिन्दी भाषा के स्वभाव और मिजाज को ध्यान में रखते हुए, नियमों में परिवर्तन करते हुए गीतिका का प्रादुर्भाव हुआ। इसमें लय को प्रधानता दी गई और काफिया तथा रदीफ के जड़ हो गये नियमों में अत्यंत बदलाव किए गए। इन्हीं बदलाव को स्वीकार करते हुए और पद्मश्री गोपाल दास नीरज की परिपाटी को आगे बढ़ाते हुए श्री कृष्णपाल सिंह भदौरिया जी ने गीतिकाओं पर अपनी कलम चलाई है। एक से एक शानदार और हृदय को छू जाने वाली रचनाएं प्रस्तुत की हैं। देखिए –

ये शब्द के घरौंदे मिटने न पायेंगे
हैं नाम ये किसी के लुटने न पायेंगे

मैं ने नहीं कहा था मैं सौ जनम जिऊंगा
पर गीत सौ युगों तक मिटने न पायेंगे

हर रोज़ डूबता है सूरज मगर किसी के
बिखरे हुए उजाले घटने न पायेंगे

ओठों से सिर्फ मेरे तुम नाम छीन लोगे
प्राणों से बिम्ब मेरे हटने न पायेंगे

इस गीतिका में कवि का छलकता आशावादी स्वर पाठक एवं श्रोताओं का उत्साहवर्धन करता है। शब्द संयोजन सुन्दर और लयात्मक है। ऐसा ही एक

और दृश्य देखिए --

एक मुद्दत से इंतजार किया जाता है
मौन इंसान गुनहगार हुआ जाता है

एक और इससे भी बेहतरीन शेर का आनन्द लिजिए --

चिराग खोजते क्यों हो चिराग बन जाओ
हवा अनुकूल है यारो कि आग बन जाओ

ग़ज़ल हो, गीतिका हो, गीत हो या कविता हो इस विधा की सबसे बड़ी विशेषता है कि बिम्ब, प्रतीक में कहना है। किसी भी बात को सीधे न कहकर इशारे में कहना और इसमें भदौरिया जी को महारथ हासिल है। एक बेहद स्तरीय और शानदार कटाक्ष देखिए –

जंग लड़नी है हमें यह जंग है इंसान की
अब न वादों से बुझेगी भूख यह इंसान की

जीवन भर के अनुभवों का निचोड़ इन पुस्तकों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। पत्थर की सदी जैसे श्रेष्ठ काव्य संग्रह के प्रकाशन पर्व पर हृदय से मेरी बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी साहित्य जगत में ये तीनों काव्य संग्रह प्रथम पंक्ति में अपना स्थान बनाने में समर्थ हैं। इन्हें वो स्थान प्राप्त होना ही चाहिए।

–विजय तिवारी
अहमदाबाद
• अध्यक्ष एवं संस्थापक
• साहित्य सेतु परिषद (पंजीकृत)
• साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट (पंजीकृत)
• vtlibrary.com विश्व का सर्वप्रथम वेब पुस्तकालय
• विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान (यूट्यूब चैनल)

पत्थर की सदी - यथार्थ मनोभावो की अभिव्यक्ति

पत्थर की सदी मेरी स्कूली शिक्षा के प्रिय शिक्षक आदरणीय कृष्णपाल सिंह भदौरिया जी का काव्य संग्रह है. इसकी अनुक्रमणिका में नवगीत एवं गीतिकायें संकलित हैं. साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट अहमदाबाद से इस पुस्तक का प्रकाशन होने जा रहा है. जिसके प्रकाशक गुजरात के जाने माने साहित्यकार, ग़ज़लकार श्री विजय तिवारी ने मुझे वाट्सप पर पी.डी.एफ. भेजी और ये सूचित किया कि भदौरिया सर का आदेश है प्रस्तुत संकलन की शीघ्र भूमिका लिख कर प्रेषित करो जिस से पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित किया जा सके. आदरणीय भदौरिया सर का मुझे भी फोन आया मैंने संकोच व्यक्त किया तो उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया मैं चाहता हूँ तुम इस पुस्तक के बारे में भूमिका लिखो.

अपने गुरू रहे रचनाकार की लेखनी पर अपनी राय देना मेरे लिए सचमुच दुष्कर कार्य था. नानी के आगे नन्होरे की बात करने में मुझे अब भी संकोच हो रहा है. मरता क्या न करता गुरू का आदेश का पालन करना ही पड़ा. किसी रचनाकार की समीक्षा करने के ख़तरों से मैं वाकिफ़ हूँ.

पर पत्थर की सदी संकलन की रचनाओं में संकलित 42 गीतों ने मेरा मनमोह लिया. प्रस्तुत गीतों में वर्णित मुझे अपने उत्तर भारत के गाँव की मिट्टी की सोंधी सोंधी महक,पीपल, बरगद, चौपाल के दर्शन हो गये. श्री कृष्णपाल सिंह भदौरिया सर बरसों से गुजरात में निवास कर रहे हैं लेकिन उत्तर भारत का उनका गाँव अभी भी उनमें रचा बसा है. वहां की भूली बिसरी यादें उनके नवगीतों में मुखरित हुई हैं. देखिये-

बात अब बीती कहानी हो गई.
सुबह किरणें ले गयी जो पालकी.
लौट आई घूप तो संध्या अजानी हो गई.
तुम नहीं आए, नहीं आए, नहीं आए.
हो गया राह का पीपल बड़ा, निमिया

सयानी हो गई है.
बात अब बीती कहानी हो गई है.

(पृष्ठ -10)

तुम नहीं आये की तीन बार पुनरोक्ति की टीस न जाने कितनी प्रतीक्षा की सूचक है भुक्तभोगी ही समझ सकता है. यहां नीम के वृक्ष निमिया का सयानी होना मानवी करण अद्भुत है.

प्रिय के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव पृष्ठ - 30 की रचना तुम्हीं में दृष्टव्य है-

तुम्हीं मेरी मंज़िल तुम्हीं मेरी राहें.
तुम्हीं रास्ते की मेरी रौशनी हो.
तुम्ही घाव मेरे, तुम्हीं लेप शीतल.
तुम्हीं मौन स्वर हो, तुम्हीं शोख़ पायल.
तुम्ही श्वांस की सान्तवना भी बनी हो.

इसी तरह पृष्ठ 37 की रचना में जीवन के अंतिम सफ़र का मार्मिक वर्णन मन को झकज़ोरता है. एकाकी पन की पीड़ा ही पत्थर की सदी की जीवन को मिली अनुपम भेंट है, जो मात्र रचनाकार की ही नहीं तमाम उम्रदराज़ लोगों की व्यथा है. जीवन से मोह भंग, विरह की पीड़ा न जिया जाय, न मरा जाय बस मृत्यु की प्रतीक्षा करना ही नियति बन गई है - देखिये -

यह सांस अगर यूं ही निकल जाय तो अच्छा है.
अब शेष बची उम्र भी ढल जाय तो अच्छा है.
तुम तो दो दिन ही साथ चलकर पंथ मोड़ गये.
शून्य में किसके सहारे, हो मुझे छोड़ गये.
आसमां उम्मीदों का फिसल जाय तो अच्छा है.

पिछले प्रहर में अपने गीत संग्रह के आत्म निवेदन में श्री कृष्णपाल सिंह भदौरियाजी ने स्व. श्री बच्चन, श्री नीरज, श्री भवानी प्रसाद मिश्र आदि काव्य जगत के पुरोधाओं की रचनाओं के अध्ययन मनन से उनके मानस पर अनेक

गीत उतर आये को स्वयं स्वीकार किया है. पुरानी फिल्मी गीतों के श्रवण गुनगुनाहट का भी उनके गीतों पर प्रभाव साफ नज़र आता है.

विरह के मनमोहक चित्रों के साथ ही भदौरियाजी ने अपने मुल्क की भी चिंता

की है-

खुश रहे ये चमन में रहूँ ना रहूँ.
रोज़ हँसती रहे फूल की पंखुड़ी.
इस तरह बीत जाये ख़िज़ा की घड़ी
खुश रहे हर नयन मैं रहूँ ना रहूँ.

(पृष्ठ- 38)

डॉ. सुभाष भदौरिया
8 अक्षरधाम बंगलोज़ बोपल,
अहमदाबाद.
तारीख - 16/06/2025
subhash_bhadauriasb@yahoo.com

अनुक्रमणिका

नवगीत

1. लहर सी उठ बोल 1

2. यह कौन आया है हमारे द्वार 2

3. आ गयी फिर अनबोली शाम 3

4. भोर हुई बिखर गया गाँव-गाँव शोर 4

5. आज फिर जीवन अकेला 5

6. दर्द की होती नहीं आवाज़ 6

7. खिजां मुझे बुला रही 7

8. तुमको पता क्या 8

9. इसलिए कुछ मौन 9

10. बात अब बीती कहानी हो गई 10

11. टाँग रहे प्रश्न चिन्ह 11

12. पीपरिया बोले आम रूठे बौराय के 12

13. शहर भर दिन रात गाँव का अंधेरा है 13

14. छिपी हुई घातें 14

15. राख भी रही नहीं 15

16. आदि अंत 16

17. सूरज आज उदास है 17

18. रोज़ रोज़ सूरज ढल जाता है 18

19. सपनों के बंद 19

20. तुम हो और कोई नहीं 20

21. युग की परीक्षा है 21
22. मन पांखी गाये ना 22
23. ढल गई है एक और शाम बिन कहे 23
24. जी लिए, एक सुबह और जी लिये 24
25. क्या कुछ है 25
26. टूट गया सपना 26
27. बंदगी तुमको मेरे अपने, मेरे अनजाने 27
28. जाग कवि 28
29. प्यार मुझको 29
30. तुम्हीं 30
31. कौन तेरा, कौन मेरा 31
32. कह दूँ बिदा कैसे 32
33. बाँट दी 33
34. रह गई है 34
35. पुकारा करूँगा 35
36. वंदना 36
37. यह साँस अगर यूँ ही निकल जाय तो अच्छा है 37
38. मैं रहूँ ना रहूँ 38
39. स्वागत क्या करूँ मैं 39
40. बस इतना अधिकार चाहता 40
41. इन्कार न करना 41
42. ज़िन्दगी कितनी बड़ी है ! 42

गीतिका

43. ये शब्द के घरौंदे मिटने न पायेंगे। 43

44. अश्कों के आइने में तुमको पुकार लेंगे। 44

45. अब भी हैं कुछ निशान उखड़े सलीब के। 45

46. मुर्दा नहीं सोया हुआ है अंधेरों डूबा शहर। 46

47. हम मंज़रे तूफान से गुजरे हुए हैं लोग। 47

48. प्यार मुमकिन नहीं नफ़रत तो करे कोई हमसे। 48

49. एक मुद्दत से इंतजार किया जाता है। 49

50. चिराग खोजते क्यों हो चिराग बन जाओ। 50

51. अंधेरी रात की साँसें ग़ज़ल नहीं होती। 51

52. भट्टियों में आज लोहा गल रहा है। 52

53. उग रही है घास घोड़े चर रहे हैं। 53

54. जंग लड़नी है हमें यह जंग है इंसान की। 54

55. थक गए हैं धूल में लेते हुए हम श्वांस। 55

56. तेज कितनी धूप है यह और पारे की नदी है। 56

57. यक़ीनन यह रास्ता मंज़िल तलक जाता तो है। 57

58. अपनी ये मेहरबानियाँ अब बस भी कीजिए। 58

59. हमको तो धूल धूंध धुआँ जो मिला मिले। 59

60. सब लिख दिया है कायदे की इस किताब में। 60

61. गुमशुदा लोग जो लौट के घर आते हैं। 61

62. देखी होगी किसीने खिली चाँदनी। 62

63. ज़िन्दगी के हलफनामे खुदकुशी साबित हुए। 63

64. आइना शहर भर घूमा तलाश किसकी है। 64

65. खेल के उपक्रम बनाए जा रहे हैं। 65

66. आस्थाएं भी वकालत हो गई हैं। 66

67. यज्ञ समिधा से मुझे दुर्गंध सी आती है क्यों। 67

68. किनारे पर खड़ा हो मझधार में बहता नहीं हूँ। 68

69. बस्तियाँ जल रही थी हम तमाशबीन थे। 69

70. गैर मुमकिन को मुमकिन मैं बना दूँ कैसे। 70

71. कल मुझे इतिहास का पन्ना मिला था। 71

72. आग का सैलाब देखा खोल जो भी द्वार देखा। 72

नवगीत

1. लहर सी उठ बोल

गूँज गौरव गान बन दिन-रात
यायावर बनी सी याद की बारात
मूक कोयल मधुर मधु कुछ बोल

शरद पूनम सी स्मृति उठ जाग
मत जगा विस्मृत चिता की आग
रसमयी रजनी सुबह मत खोल

रुक न पगली पूर्व की बिन आश
लौट माथे पर चढ़ी उच्छवास
डाकिया इस क्षण न पाती खोल

जाग सागर की न इस क्षण प्यास
खो न क्षण इस स्वप्न का विश्वास
झील पारे की न आखिर डोल

2. यह कौन आया है हमारे द्वार

सीने में पराई आशाओं का ताजमहल
आश्रित अरमानों से बोझिल बोझिल आँचल
यह कौन पत्थर से बहाता धार

बालों में युग की कुंठाओं का सूनापन
माँगों में कण-कण कुंकुम का कलरव क्रंदन
यह कौन ईर्ष्या में भिगोए प्यार

साँसों में प्रतिपल नया जन्म, बेसुध बचपन
हाथों में सबलों की प्रतिमा का ले खण्डन
यह कौन आँसू में किये श्रृंगार

पुतली में गहरे सागर का सा उथलापन
बातों में छिछले मानव का गहरा दर्शन
नयी पीढ़ी को उदर में धार
यह कौन पैरों में लिये युगभार

3. आ गयी फिर अनबोली शाम

मन में ले काली सी बात
छा गई अंधियारी रात
धरती के मैले आँचल में
होता है सूरज नीलाम

मानव का कैसा उपहास
सोते ही खिल उठा आकाश
परिचित सी हर कल की भोर
चहल-पहल काम कुहराम

ढल गया उठाव उस छोर
बंद हुई जीवन की दौड़
रावण ले कल फिर से जन्म
इसीलिए सोया है राम

वैश्या घर भटका सुहाग
पी गया अंधेरा सब दाग
मद ने ली हाट सब खरीद
प्रगति प्रकृति हो रही है जाम

गिरवी रख मन का विश्वास

4. भोर हुई बिखर गया गाँव-गाँव शोर

भोर हुई बिखर गया गाँव-गाँव शोर
गोमती में गंगा में
बगुलों ने डुबकी ली
कछुओं ने क्रय करली
सिन्धु भूमि रेतिली
ज्वार आया टूट गया लहरों का जोर

रजनी तो काली थी
सूरज क्यों रूठा है
किरणों का जाल आज
लगता क्यों झूठा है
खाली पेट चल दिए सब चरने को ढोर

डाल डाल कौओं ने
कोयलें खरीदी हैं
फूलों की आँखें रक्त-
रंजित उनींदी हैं
सावन में कौऐ बन बोलें ज्यों मोर

फूल बिना बगिया में
महक रही डाली है
हाथ चलें पाँव चलें
मगर पेट खाली है
टूट टूट जुड़ रही है श्वासों की डोर

5. आज फिर जीवन अकेला

आज फिर जीवन अकेला
तन अकेला
मन अकेला
आज फिर आँगन अकेला

डर अकेला
स्वर अकेला
आज फिर गुँजन अकेला

भरा मेला
पथ अकेला
इसलिए क्रंदन अकेला

माँ, प्रणयिनि
नारी, सहचरी
मैं अकेला
इसलिए वंदन अकेला

6. दर्द की होती नहीं आवाज़

दर्द की होती नहीं आवाज़
कैसे सुन सकोगे मौन
प्रच्छा कर रहा यह कौन
पीड़ा नहीं सजती सभ्यता के शब्द, भाषा, साज
दर्द की होती नहीं आवाज़

किसीके दर्द का पर्याय
बनते शब्द मेरे हाय
प्रकट हो जाता युगान्तर का छिपा यह राज

गाता गीत हूँ लेकिन
न गा पाया हृदय की ध्वनि
कि जो कल भी रही थी मौन एवं मौन है जो आज

हृदय औ' बुद्धि की दूरी
न व्याख्या एक भी पूरी
तर्क से उठती नहीं विश्वास की आवाज़

7. खिजां मुझे बुला रही

दूर बहुत दूर से आवाज़ एक आ रही
खिजां मुझे बुला रही

पात झर गये सभी उम्र के बबूल के
साख सज रही है स्वप्न साज सभी शूल के
दूर बहुत दूर से आँधियाँ मचल उठीं
हवा मुझे बुला रही

डूब तट सभी गये समुद्र के उफान में
चाँदनी भटक गई तम भरे मकान में
दूर बहुत दूर से चाँद यों पुकारता
अमाँ मुझे बुला रही

पंख फड़फड़ा रही है शोकमग्न टिटहरी
चीख रही अनायास छाँव जली दुपहरी
दूर बहुत दूर जल रहा है स्वप्न का मकान
लौ मुझे बुला रही

दूर के मसान के पंथ चल उठे सभी
हर सुबह उदास भाग्य सूर्य ढल उठे सभी
दूर बहुत दूर मौन चीखता पुकारता
चिता मुझे बुला रही

8. तुमको पता क्या

श्वांस चलने को रही चलती मगर
बिन तुम्हारे ज़िन्दगी कैसे ढली
तुमको पता क्या

यह कि
तुमने कभी पूछा ही नहीं है गीत क्या है
मौन कुंठा जी मिली वह जीत क्या है
राह चलने को रही चलती मगर
बिन तुम्हारे रीति यह कैसे चली
तुमको पता क्या

यह कि
जब तुम नहीं थे इस गाँव में कैसे पला मन
यंत्र सा हर लीक पर चलता रहा तन
बात चलने को रही चलती मगर
बिन तुम्हारे भावना कैसे पली
तुमको पता क्या

यह कि
यह जाने बिना पाथेय क्या चलते रहे पग
चक्र सा निर्लिप्त मन चलता रहा मग
आश पलने को रही पलती मगर
बिन तुम्हारे कौन सी मंज़िल मिली
तुमको पता क्या

यह कि
हूँ अनजान, तुम हो मौन, तो विध्यर्थ क्या है?
जानता, तुम जानते, मेरी व्यथा का अर्थ क्या है?
आग जलने को रही जलती मगर
बिन तुम्हारे मौत भी कैसे मिली
तुमको पता क्या

9. इसलिए कुछ मौन

ऊषा के शब्द चुरा संध्या बेच आई
इसलिए कुछ मौन रही मेरी शहनाई

निश्चय ही नई भोर होगी क्या कल
लुटता रहा सारे दिन आस्था का आँचल
श्रद्धा की पौध धूप आँगन में कुम्हलाई
इसलिए कुछ मौन

अंधेरों में डूबते बसंत के पलाश
स्थिर मछलियों से भरा-भरा आकाश
उत्सव में चील और बगुलों की अँगड़ाई
इसलिए कुछ मौन

शहर की सड़कों का जंगल में बदलना
परिभाषित पत्थरों के अर्थों का पिघलना
सड़क पगडंडी की खाई गहराई
इसलिए कुछ मौन

10. बात अब बीती कहानी हो गई

बात अब बीती कहानी हो गई
सुबह किरणें ले गई जो पालकी
लौट आई धूप तो संध्या अजानी हो गई
बात अब बीती कहानी हो गई

खस गया है गाँव का हरदौल चौरा
सुहागिन दीपावली दीपक न सैयद पर चढ़ाती है
रात बीती का बहाना ताल का महुआ नहीं अब
अब न कोई रात जग जग कर बुलाती है
कछारों को जोड़ने वाला बना पुल क्या
नदी की धार ज्ञानी हो गई
बात अब बीती कहानी हो गई

एक गमले में लगी तुलसी चौपाल का वट हो गई
होली बौखलाहट हो चुकी, सरसों फगुनाहट खो गई है
बात यह उतनी नई जितने कि तुम थे
अब पुरानी हो गई है

तुम नहीं आए, नहीं आए, नहीं आए
हो गया राह का पीपल बड़ा निमिया सयानी हो गई है
बात अब बीती कहानी हो गई है

11. टाँग रहे प्रश्न चिन्ह

माटी की गंध खोज अर्जित आकाश से
टाँग रहे प्रश्न चिन्ह निरर्थक पलाश से

रुग्ण हवा, बहस
और डिब्बों में ताजगी
बदल, बदल कफ़न
अर्थ खोजती सी ज़िन्दगी
केंसर
पहचान किसी आयातित श्वांस से
टाँग रहे प्रश्न चिन्ह

उगे हुए अंकुर के
होने का विरोध,
शक्ति का विभाजित
बुद्धिजीवी प्रतिशोध
घर, द्वार, बाजार
धुबिया की प्यास से
टाँग रहे प्रश्न चिन्ह

12. पीपरिया बोले आम रूठे बौराय के

पीपरिया बोले आम रूठे बौराय के
वट दादा हारि थके उनको समझाइ के

कौन करे पुरवा की अगवानी कौन करे
गाँव के दुआर आज मिजवानी कौन करे
सूनी चौपाल सबै बैठे विसराइ के

थके जेठ पाहुन को पानी पियावै कौन
सावन की डोर खींच झूला झुलावै कौन
सूना मन भादों भीगा विहाग गाय के

13. शहर भर दिन रात गाँव का अंधेरा है

शहर भर दिन रात गाँव का अंधेरा है
सड़कों के जाल पर
अनजाने चेहरे
बैठे फुटपाथों पर
मंत्र सिद्ध सपेरे
द्वार द्वार खुला पर तेरा या मेरा है

कच्ची धूप खिलती है
संध्या की अमराई
सूरज की किरण थकी
पंखुड़ियाँ मुरझाई
कच्ची दीवालों पर थक गया सबेरा है

व्यवस्था की गंध हर
मंदिर के दरवाज़े
माँगते वरदान सभी
राजे या महाराजे
घर मंदिर सबमें शैतानों का डेरा है

मोरी में मेढ़क हैं
घर के पिछवाड़े
इसी तरह ढलते रहे
घड़ी दिन पखवाड़े
खुले मुँह द्वार, भीतर भूख का बसेरा है

14. छिपी हुई घातें

आजकल पुरवायी बहुत गर्म होती है

ख़ून भरी हँसी लेकर
काँटों के रिश्ते
गली हाट अपने बहुत
मिलते हैं सस्ते
अंगारे पर की राख बहुत नर्म होती है

आज का व्यवहार
साँस रोके चला जाता है
सभ्यता के नाम
सब जिया सहा जाता है
आज सिर्फ वेश्या में बहुत शर्म होती है

बंद टोकरी में
बहुत कीड़े पतंगे
साथ साथ खाते हैं
करते हैं दंगे
खुली हुई दुश्मनी बड़ा अधर्म होती है

चलने को चलती है
चलने की बातें
दोस्ती के जामे में
छिपी हुई घातें
उजली ईमानदारी एक जुर्म होती है।

15. राख भी रही नहीं

बीत गए बहुत दिन, बहुत दिन, चिता जले

झड़ गये पलाश के फूल सभी
रुक गये तलाश के कूल सभी
बीत गए बहुत दिन, फूल भरी राह चले

चंपई सुबह ढले कि युग ढला
पॉव थक गये कि पंथ तब चला
बीत गए बहुत दिन, रूप भरी हाट जले

बहुत दिन हुए चिता जली कहीं
शेष अब अस्थि की राख भी रही नहीं
बीत गए बहुत दिन, मशान पर हवा चले

कौन अब पुकारता बिखर गई राख
कौन अब संवारता लुटी हुई साख
बीत गए बहुत दिन, जन्म की घड़ी ढले

16. आदि अंत

फिर फिर क्यों आता है द्वार मेरे वसंत

हवा हुई गर्म सर्द मन का हर कोना
जी रहा है फागुन होनी का होना
अंधी दिशाओं में अंधियारा है अनंत

फँसा है मन इन मशीनों के चक्कों में
सड़क खो गई ख़ुद भीड़ भरे धक्कों में
खोज रहे अपने को खोये से दिगंत

माथे पर उग आए बेमौसम के बबूल
खोज रहे गुलशन को कितने गुमराह शूल
पीड़ा को न मिलता है अपना ही आदि अंत

आती हर बार क्यों चीख रही सी बहार
ढोता है शैशव ही मानो हर पतझार
महक के माथे पर प्रश्न चिन्ह से ज्वलंत

17. सूरज आज उदास है

कुंठाओं के घर गिरवी यह सारा ही आकाश है
इसीलिए तो बड़े सुबह से सूरज आज उदास है।

आज अन खिली धूप है
मौन महकता रूप है
चौराहों पर पंथ खोजता
हर पथ का विश्वास है
सूरज आज उदास है

आज सुहानी चाँदनी
सहज मनोहर पावनी
अंधकार के द्वार खोजती
चंदा का आवास है
सूरज आज उदास है

कदम-कदम है डोलता
मन का पर्वत बोलता
बंद मशीनों से है आती
चीख रही सी श्वास है
सूरज आज उदास है

कुंकुम रोली भाल पर
रोती अपने हाल पर
अनगौनाहे फागुन के घर
चौमासे का वास है
सूरज आज उदास है

18. रोज़ रोज़ सूरज ढल जाता है

रोज़ रोज़ सूरज ढल जाता है

आते ही उमस भरी गंध
अंधेरे से करके अनुबंध
चुपके से द्वार से उजाला फिसल जाता है।

पाकर अंधेरा आकाश
अपनी ही रचना की लाश
हाथ में उठाए, युग ब्रह्मा निकल जाता है

सुबह चल किरणों की छाँव
संध्या तक लौटे जो पाँव
तो द्वार का पहचाना मुहावरा बदल जाता है।

19. सपनों के बंद

आते ही फगनौ की गंध
द्वार द्वार मचल उठे छंद

रंग के गुलाल के
महुये की डाल के
महक गये प्यार भरे
सपनों के बंद

फूल की कटोरी में
चूनर रस बोरी में
बहक गए साधों के
सौ सौ अनुबंध

फागुन की गली में
अधरों की लाली में
उभर रहे धड़कन के
अनजाने द्वन्द

होली हुड़दंगों में
प्यार भरे रंगों में
एक नयन ढूँढ रहा
छिप छिप संबंध

20. तुम हो और कोई नहीं

मेरे आँगन में जुन्हैया जो निकली
किसी चंदा की नहीं, मेरी कथा कहती है।

ले के सूरज से किरन चाँद से उसकी विभा
इन सितारों ने संवारा है जिसे
तुम हो और कोई नहीं।
और फूलों ने महक फैला कर अपनी
हँस के बाँहों पे उभारा है जिसे
तुम हो और कोई नहीं।
किसी बगिया की नहीं, मेरी महक बहती है

ले के फूलों की हँसी, गान भौंरों से मधुर
गीत जो भी है बना स्वर तुम्हारा ही तो है।
रोज़ आँगन में दिवाली जहाँ रहती है
घर हमारा है प्रिये घर तुम्हारा ही तो है।
मेरे आँगन में आज सहमी सहमी
लाज मौसम की नहीं
इन कपोलों की लाज बहकी है।

सारी अजन्ता की कला और कुछ भी है नहीं
बस तुम्हारी है शकल, बस तुम्हारी है नकल।
ले के मुर्दा बुत एक हसीन अपने सीने में
देख के तुमको प्रिये रोता होगा ताजमहल।
और इस ज़मीं को ख़ूबसूरती जो भी है मिली
उसके कण कण में तुम्हारी ही हँसी बसती है

21. युग की परीक्षा है

अच्छी किनारों से
बिना आश्रय मिली मझधार

अनेकों शर्त
तट पर पाँव रखने के लिए हैं।
कहाँ निर्बन्ध यात्रा ने
चरण स्थिर किये हैं।
कटा संदर्भ से सच
ठहर कर जाता, अकेले हार।

मौन मातम नहीं
युग की परीक्षा है
थपेड़ों से मिला संवाद संचय
एक दीक्षा है
किलों की सुरक्षा से भली
रेगिस्तान की फुंकार।

22. मन पांखी गाये ना

आज कोई मन मेरे गीत फिर जगाये ना
मन पांखी गाये ना

शीशे की झील, पारदर्शक अंधेरे में
मर्यादा ग्रस्त मीन, मुक्त मुस्कुराये ना
मन पांखी गाये ना

धुंध ग्रस्त सूरज के टूटते सबेरे में
किरन बिना सूरजमुखी पांखुरी खिलाये ना
मन पांखी गाये ना

सजी संवरी परकीया चाँदनी के घेरे में
अपने बिन पगला मन चाँद मुस्कुराये ना
मन पांखी गाये ना

टूट टूट जुड़े इस जीवन के डोरे में
पीड़ा की कोर कोई शोर अब जगाये ना
मन पांखी गाये ना

23. ढल गई है एक और शाम बिन कहे

ढल गई है एक और शाम बिन कहे

दिवाली की रौशनी में भटकता अंधकार
ख़ुशियों के शोर की चीखती पुकार
दीपकों का पंक्तिबद्ध कुहराम कहकहे
बिन कहे

आटे के डिब्बों की खोखली आवाज
बोनस की बाट में जेबकतरे आतिशबाज
सुबह के खाली हाथ शाम तक चलते रहे
बिन कहे

24. जी लिए, एक सुबह और जी लिये

जी लिए, एक सुबह और जी लिये

काँटों भरी छाँव में धूप चले
लौट लौट पाँव चले
मरघट की राह में
विष घूँट पी लिये
एक सुबह और जी लिये

नंगे बदन घूम आए
कैक्टस के गाँव में
लुक छिप अमावस की छाँव में
सूरज के पैबंद सी दिये
एक सुबह और जी लिये

25. क्या कुछ है

क्या कुछ है श्वासों में दूध के उफान सा
तन में तूफान सा मन में रुझान सा

आँतों में टूटा कुछ मन की पराजय सा
श्वासों में जमा कुछ बर्फ के हिमालय सा
बर्फ के हिमालय के भीतर चट्टान सा
क्या कुछ है

बिजली के बल्ब सा जले ज़िन्दा तार सा
प्राणलेवा प्राणवान विद्युत संचार सा
फ्यूज हुए बल्ब की नकली मुस्कान सा
क्या कुछ है

पूनम के आँगन में रोशनी इठलाई सी
अमाँ निशा ओढ़ ओढ़ चाँदनी अकुलाई सी
चाँदनी के धब्बों से चाँद बदनाम सा
क्या कुछ है

26. टूट गया सपना

कितनी दूर चल आया तेरी यह राह
आज तुम न आए तो मिट गई चाह
टूट गया सपना जो तुमने दिया

खोज थकी श्वांस श्वांस तेरा विश्वास
उतर गई कलेजे में साधों की प्यास
जीवन दे तुमने क्यों दे दी कराह
टूट गया सपना जो तुमने दिया

कल फिर आएगा सावन विश्वास नहीं
गायेगा रोता मन इतनी भी आस नहीं
पार करूँ कैसे मैं सिन्धु यह अथाह
टूट गया सपना जो तुमने दिया

सिर्फ एक तुमसे ही पाया था प्रथम प्यार
अंतिम यह प्रीति दांव तुम बिन मैं गया हार
माँगू मैं आज कहो किसके घर में पनाह
टूट गया सपना जो तुमने दिया

27. बंदगी तुमको मेरे अपने, मेरे अनजाने

बंदगी तुमको मेरे अपने, मेरे अनजाने

बहुत सच है कि यह
पहचान नई है तुमसे
खोजता प्राण रहा
मगर तुम्हें युग युग से
आँख ने देखा नहीं मगर श्वांस पहचाने

अजनबी हूँ मैं फिर भी
अनजान नहीं लगता हूँ
आके आँगन में तुम्हारे
मेहमान नहीं लगता हूँ
आज बेनाम सभी अपने सभी पहचाने

बंदगी उनको कि
जिनका दुलार पाया है
जिनके चरणों में बैठ
आशीष प्यार पाया है
बंदगी उनको जो कल तक थे मेरे बेगाने

28. जाग कवि

कह रही थी सूर्य की पहली अछूती सी किरण
जाग कवि क्यों सो रहा है

सुनो चिड़ियाँ गा रही हैं आज स्वागत गान
और खिलकर फूल तेरा कर रहे सम्मान
हो प्रफुल्लित देखते हैं तुझे विस्मित से नयन
जाग यह सुख खो रहा है

खुल रहा है हर गली का बंद हर एक द्वार
हर एक भोला मन खड़ा है लिए स्वागत हार
कर रही है गाँव की यह धूल तुझको ही नमन
आज क्यों चुप हो गया है

29. प्यार मुझको

इन्दु तुम मेरे सखा हो, चाँदनी से प्यार मुझको।

जानता तो तुम्हें भी हूँ
पर न अब तक पास आया
चाँदनी का तो मगर मैं ने
सुखद सहवास पाया।
चाँदनी से प्यार इससे इन्दु तुमसे प्यार मुझको

रूठ मत जाना तुम्हें भी
जानता पहचानता हूँ
उसी नाते से सही पर
एक रिश्ता मानता हूँ
बुरा मत मानो तुम्हारे प्यार से है प्यार मुझको

ठीक है मैं दूर का हूँ
कुछ नहीं लगता तुम्हारा
चाँदनी से तो मगर है
प्रेम जन्मों का तुम्हारा
चाँदनी है साथ इससे इन्दु तुमसे प्यार मुझको

खो गई है चाँदनी तो
आज तुम तो साथ दे दो
ज़िन्दगी चलती रहे
इसलिए अपना हाथ दे दो
प्यार के दूरस्थ साथी आज तुमसे प्यार मुझको

30. तुम्हीं

तुम्हीं मेरी मंज़िल तुम्हीं मेरी राहें
तुम्हीं रास्ते की मेरी रौशनी हो

तुम्हीं घाव मेरे तुम्हीं लेप शीतल
तुम्हीं मौन स्वर हो तुम्हीं शोख पायल
तुम्हीं रागिनी हो सिसकते स्वरों की
तुम्हीं श्वांस की सान्त्वनाभी बनी हो

मिला जो मुझे पंथ तुमने दिया है
हर एक क्षण तुम्हारा जो मैं ने जिया है
तुम्हीं प्राण की पथ प्रदर्शक रही हो
तुम्हीं हर कदम की सहगामिनी हो

तुम्हीं दीप हो उम्र की आरती का
तुम्हीं हो सहारा मेरी बेखुदी का
तुम्हीं भाव पावन हो साधना का
मन देवता की तुम्हीं संगिनी हो

तुम्हीं चाँद सूरज की भावना हो
तुम्हीं प्राण मेरी आराधना हो
तुम्हीं हो नवेली उषा की किरन सी
तुम्हीं चाँद के स्वप्न की चाँदनी हो।

31. कौन तेरा, कौन मेरा

कौन तेरा, कौन मेरा
बस यही है नियति अपनी, छोड़ दूँ मैं गाँव तेरा

जबकि पूजा व्यर्थ मेरी
वन्दना बिन अर्थ मेरी
यहाँ मैं अपना नहीं तो, छोड़ दूँ मैं यह बसेरा

देव प्रतिमा वंदना से
हो न मेरी अर्चना से
देवता फिर ठीक यह ही छोड़ दूँ यह द्वार तेरा

भक्ति जब विश्वास खोये
तो हृदय किस द्वार रोये
भावना की मौत का होते नहीं देखा सबेरा

आज फिर बेघर हुआ हूँ
पंथ का सहचर हुआ हूँ
शून्य खोजूं भी मगर क्या मिल सकेगा भाव तेरा
बस यही है भाग्य अपना छोड़ दूँ वह गाँव तेरा।

32. कह दूँ बिदा कैसे

आज तक करता रहा हूँ सिर्फ तुमसे प्यार
कह दूँ बिदा कैसे

फैलती हैं रश्मियाँ
सूरज जुदा होता नहीं
प्यार सच्चे प्यार से
हरगिज़ बिदा होता नहीं
छोड़ दोगे द्वार पर क्या तोड़ दोगे प्यार
कह दूँ बिदा कैसे

आँधियों में सुमन लुटते
तो, मगर मिटते नहीं
प्रगति पथ पर बढ़ रहे
जो चरण वे रुकते नहीं
यह न मेरी जीत साथी, यह न मेरी हार
कह दूँ बिदा कैसे

33. बाँट दी

मैं चुप हूँ इसलिये कि मैंने फूलों को मुस्कान बाँट दी।

चाहा कुछ भी नहीं दिया है
अमृत बाँटा गरल पिया है
जीवन मुझमें नहीं कि मैंने निर्जीवों की जान बाँट दी।

सरगम मेरी, साज हमारा
चुप हूँ यह तो राज हमारा
गुँजन मुझमें नहीं कि मैंने हर भौंरे को तान बाँट दी।

मेरी ऋणी प्रकृति यह सारी
लक्ष्मीपति या दीन भिखारी
निर्धन हूँ इसलिये कि मैंने धनवानों को शान बाँट दी।

34. रह गई है

ज़िन्दगी थी कभी अब केवल कहानी रह गई है

पाठ केवल एक था
पुस्तक बदलती रही तो क्या।
भाव सबका वही था
घटना बदलती रही तो क्या।

पर हवा का एक झोंका पलट सब पन्ने गया है
आज उस इतिहास की यादें पुरानी रह गई हैं।

आज मेरे शब्द के
आयाम सब बदले हुये हैं।
थे कभी ईमान पर
बदनाम जो, बदले हुये हैं।

दर्द मेरे हृदय में है, दवा ले सकता नहीं हूँ
प्यार के बलिदान की इतनी निशानी रह गई है।

35. पुकारा करूँगा

कभी न कभी ये अधर बोल देंगे
रहो मौन तुम मैं पुकारा करूँगा

अगर आसमाँ ये तपन छोड़ दे तो
सितारे वहाँ रात आते नहीं है।
मांझी अगर डर गया धार से तो
किनारे कभी पास आते नहीं हैं।

सदियों पुरानी प्रणय की कहानी
कि पत्थर पिघलता रहा आह से है।
कभी तो तुम्हारे कदम चल उठेंगे
इसी आश में पथ निहारा करूँगा।

भले सख्त पाबंदियाँ वक्त की हों
मगर हर चमन गुल खिलाता रहा है।
कभी तो कली के अधर खिल उठेंगे
इसी से भँवर गुनगुनाता रहा है।

जमाने ने पागल कहा शुक्रिया है
मगर तुम बखूबी मुझे जानती हो
कभी बात मन की नयन खोल देंगे
इसी से उन्हें ही निहारा करूँगा।

36. वंदना

वंदना आराध्य रानी
कौन-सी दूँ भेंट जो बन जाय प्रिय मेरी निशानी।

पुष्पमाला, अगरु, वस्त्राभरण
क्या अर्पण करूँ मैं।
इन पराई वस्तुओं से
किस तरह पूजन करूँ मैं।
न जाने कितने युगों की हो चुकी ये सब पुरानी।

तुम्हारे वरदान सा यह
भावना का जो सुमन है।
किसी ब्रह्मा का नहीं
यह गीत मेरा ही सृर्जन है।
यही है अर्पित तुम्हें इस प्राण की मौलिक कहानी।

37. यह साँस अगर यूँ ही निकल जाय तो अच्छा है

यह साँस अगर यूँ ही निकल जाय तो अच्छा है
अब शेष बची उम्र भी ढल जाय तो अच्छा है।

कौन है जिसके लिये साँस लिये जाऊँ मैं
कौन है जिसके लिये मौत जिये जाऊँ मैं मैं।
यह रोती हुई शमाँ गुल हो जाय तो अच्छा है।

तुम तो दो दिन ही साथ चलकर पंथ मोड़ गये
शून्य में किसके सहारे, हो मुझे छोड़ गये।
आसमाँ उम्मीदों का फिसल जाय तो अच्छा है।

धूप दिन भर की खिले इसलिये हसा था मैं
अपनी बदकिस्मती के बियावान से गुजरा था मैं।
मायना मेरे मुकदर का बदल जाय तो अच्छा है।

मैंने हर रात खामोशी से मुलाकातें की हैं।
तुम तो आये न, तुम्हारी यादों से बातें की हैं।
रोज की मौत का जनाजा निकल जाय तो अच्छा है।

38. मैं रहूँ ना रहूँ

ख़ुश रहे ये चमन मैं रहूँ ना रहूँ।

रोज हसती रहे फूल की पंखुडी
इस तरह बीत जाये खिजाँ की घड़ी।
ख़ुश रहे हर नयन मैं रहूँ ना रहूँ।

दूर से देख लूँगा हसी चाँद की
यूँ गुजर जायेगी रात हर याद की
ख़ुश रहे ये गगन मैं रहूँ ना रहूँ।

कुछ बसेरा दिया शुक्रिया है तुम्हें
एक सवेरा दिया शुक्रिया है तुम्हें
ख़ुश रहे हर किरन मैं रहूँ ना रहूँ।

गर मिलो राह पर जान लेना मुझे
था तुम्हारा कभी मान लेना मुझे
ख़ुश रहो प्राण धन मैं रहूँ ना रहूँ।

39. स्वागत क्या करूँ मैं

क्या नया लाया नया दिन द्वार
स्वागत क्या करूँ मैं।
अभी मेरा बाग़ सूखा
अभी भी अनुराग सूखा।
सुमन की तो बात क्या
कंटकों का भाग सूखा।
लुटी पंखुड़ियाँ कहाँ से ला सकूँ मैं हार
स्वागत क्या करूँ मैं।
अभी भी आँधी यहाँ है
महज बरवादी यहाँ है।
युग युगों से गाँव मेरा
अश्रु का आदी रहा है।
एक भी फूली नहीं है माँग की मनुहार
स्वागत क्या करूँ मैं।
आरती कैसे सजाऊँ
वंदना में क्या सुनाऊँ
लुटा है हर गान मेरा
कौन सा अब गीत गाऊ।
सिसकता है हाथ खोकर हाथ का अधिकार
स्वागत क्या करूँ मैं।
कौन सा विश्वास दोगे
आग को क्या आस दोगे।
सदा से उजड़े हृदय को
कौन सा मधुभास दोगे।
दे सकोगे क्या उसे, जीवन गया जो हार
स्वागत क्या करूँ मैं।

40. बस इतना अधिकार चाहता

दूर बहुत हूँ तेरे पथ से पर इतना अधिकार चाहता
थकित जहाँ पर तुम हो जाओ मैं सौरभ बनकर आ जाऊँ।

नहीं चाहता भाग तुम्हारे
यश के तुम्हीं एक अधिकारी।
सौ संसार निछावर तुम पर
जनम जनम की रिधि सिधि सारी

किन्तु जहाँ पर भाग्य तुम्हारा छल जाये, निधियाँ लुट जायें
बस इतना अधिकार चाहता, मैं संबल बनकर आ जाऊँ।

कदम तुम्हारे चलें जहाँ पर
सौ मधुऋतु पथ पर बिछ जायें
करो जहाँ विश्राम वहाँ का
हर पत्थर पंकज बन जाये।

पर तेरी सुख की बगिया में भूल भटक पतझड़ आ जाये।
बस इतना अधिकार चाहता, मैं कोयल बनकर आ जाऊँ।

भँवरे का गुंजन तेरा है
झिल्ली की झंकार तुम्हारी,
श्वाँस श्वाँस तेरी जग भर की
स्वर सरगम की हो अधिकारी।

पर जिस दिन जीवन वीणा स्वर, अनायास कुंठित हो जाये
बस इतना अधिकार चाहता, मैं कलरव बनकर आ जाऊँ।

तुम्हें मुबारक यह शहनाई
जीवन भर की ख़ुशियाँ सारी।
दूर कहीं उजड़े बबूल से
रहूँ देखता यह फुलवारी।

पर जिस दिन बारात सजे, सब छोड़ गये हों चिता अकेली,
बस इतना अधिकार चाहता, मैं साधक बनकर आ जाऊँ।

41. इन्कार न करना

सभी सुमन लेकर लौटे हैं, तेरी फूल भरी बगिया से
मैं काँटे लेने आया हूँ काँटों को इन्कार न करना।

माना मैं तो पात्र नहीं था,
पर वे सब क्या थे अधिकारी।
बिन माँगे सौभाग्य सिन्धु सी
जिनको ममता मिली तुम्हारी।

मिली किसी को ख़ुशबू, मुझको घाव, नहीं इसका शिकवा है
मैं आहें लेने आया हूँ आहों से इन्कार न करना।

किसी किसी को पथ ले जाता
मंदिर मस्जिद के दरवाजे
पर जाने क्या बात कि मुझको
छलती अपनी ही आवाजें।

कितने घर पावन कर आये, पाँव तुम्हारे ही खुद चल कर
मैं ठोकर खाने आया हूँ, ठुकराना इन्कार न करना।

सबको तो वरदान मिला पर
मेरी ही झोली क्यों खाली।
क्या लेकर जाऊँ गुलशन से
कैसा न्याय भला यह माली।

मैं तो धूल सजाने आया, जो कि सदा से मेरी साथी,
ओ दाता मुट्ठीभर रजकण, दे देना इन्कार न करना।

जब तक याद करो तुम मुझको
छा जाये तब तक न अँधेरा।
मौत चली जिस दरवाजे से,
होता फिर उस घर न सबेरा।

मैं तो पहले ही चल आया, वह पथ जो मरघट जाता है
अब ज्वाला लेने आया हूँ ज्वाला से तुम प्यार न करना।

42. ज़िन्दगी कितनी बड़ी है !

ज़िन्दगी कितनी बड़ी है !

श्वाँस सरगम पर किसी की ध्वनि न हो तो गीत कैसा।
धडकनों की बात सुनता हो न तो मनमीत कैसा।
आँधियाँ मैंने सहेजी आज पुरवा की घड़ी है।

देख लीं रातें कि जिनमें मौन हो आकाश रोया।
देख लीं बातें कि जिनमें बात ने विश्वास खोया।
आज तो आकाश से विश्वास की भाँवर पड़ी है।

स्वर्ग से गिरकर अवनि का मनुज होना भी सराहा।
आज तो देवत्त्व ने भी पूजना मनुपुत्र चाहा।
शाप की निशि ढल चुकी अब आ गई पूजन घड़ी है।

तोड़कर अरमाँ किसी का प्यार तो चाहा नहीं था।
मृत्यु को पहले कभी इतना सराहा तो नहीं था।
टूटती कड़ियाँ रही जो, बन गई वे ही लड़ी हैं।

गीतिका

1

ये शब्द के घरौंदे मिटने न पायेंगे।
हैं नाम ये किसी के लुटने न पायेंगे॥

मैं ने नहीं कहा था मैं सौ जनम जिऊँगा,
पर गीत सौ युगों तक मिटने न पायेंगे।

हर रोज डूबता है सूरज मगर किसी के,
बिखरे हुए उजाले घटने न पायेंगे।

ओठों से सिर्फ मेरे तुम नाम छीन लोगे,
प्राणों से बिम्ब मेरे हटने न पायेंगे।

2

अश्कों के आइने में तुमको पुकार लेंगे।
नफ़रत हमें मिली पर तुमको प्यार देंगे॥

स्वर आज डूबता है तो उसको डूबने दो,
कल हर लहर के ऊपर सरगम संवार देंगे।

सावन ने कब सुनी है बैशाख की व्यथाएं,
हम जेठ सी जलन को पुरवा बहार देंगे।

तुम मौन हो पता क्या बेबसी से घृणा से,
हम मौन चाँदनी के स्वर को दुलार देंगे।

मेरा पता ठिकाना, कल गीत ये कहेंगे,
मेरे भी बाद तुमको ये गीत प्यार देंगे।

3

अब भी हैं कुछ निशान उखड़े सलीब के।
कुछ और दाग़ भी हैं निगाहें करीब के॥

बदशक्ल खूबसूरती का यह विशाल पट,
ओढ़े हुए है बिन्दु कुछ आगत हबीब के।

पिसते हुए न रोयेंगे किस्मत के नाम को,
हमने समझ लिए सभी माने नसीब के।

कब तक रहेगी आँसुओं का माप इबादत,
बदलेंगे इस धुँये में काँटे जरीब के

4

मुर्दा नहीं सोया हुआ है अंधेरों डूबा शहर।
महज़ पूनम की प्रतीक्षा में अरे भूला शहर॥

दूर की कौड़ी बहुत लाते यहाँ के रहनुमा,
आँधियों में ही हुआ तय आजतक का कुल सफ़र।

गाँव के ठण्डे हुए अलाव सी हर श्वांस,
दे रही अविजित हवाओं को निमंत्रण फिर इधर।

रौशनी की छाँव भर थी दूर की वह चाँदनी,
पी जिसे जी भर रही होती भ्रमित पैनी नज़र।

भविष्यत् लौ के लिए है यह अंधेरा लाजिमी,
मुक्ति किरणों को मिलेगा इसी में अपना सहर।

5

हम मंज़रे तूफान से गुजरे हुए हैं लोग।
साजिश है किसी की कि बिखरे हुए हैं लोग॥

यह मानकर कि हर दिशा में उग रहा है सूर्य,
बस रौशनी के द्वार पर ठहरे हुए हैं लोग।

हमको खिलाई जा रही है आजतक अफीम,
मार्क्स, लेनिन के विकृत चेहरे हुए हैं लोग।

यद्यपि हमारे सामने है यह खुला आकाश,
हम स्वयं अपनी श्वांस के पहरे हुए हैं लोग।

सुविधाजनक मकान का अब मिट चुका है भ्रम,
इतना कि अब भी झूठ को घेरे हुए हैं लोग।

6

प्यार मुमकिन नहीं नफ़रत तो करे कोई हमसे।
साथ आये न पर वादा तो करे कोई हमसे॥

रास आता नहीं तूफान में चलना सबको,
लौट आऊं तो तूफ़ान की बातें तो करे कोई हमसे।

आप ख़ुश भी नहीं, परेशां कुछ भी नहीं होते,
हमको भी इंसान समझ कुछ तो करे कोई हमसे।

तुमको चाहूँ, तुम्हें मंजूर नहीं, बेबसी है अपनी,
गैर ही मान के शिकवा तो करे कोई हमसे।

एक मुद्दत से मर मर के जिये जाता हूँ,
झूठ ही हो, ज़िंदा हूँ इतना तो कहे कोई हमसे।

7

एक मुद्दत से इंतजार किया जाता है।
मौन इंसान गुनहगार हुआ जाता है॥

आस्था चरमरा के टूटी है एक पीढ़ी की,
प्यार इंसान का तलवार हुआ जाता है।

छीन ली राख भी हवाओं ने छिन्न स्वप्नों की,
अब तो विश्वास भी बाजार हुआ जाता है।

भरोसा किस पे हो सियारों की सुर्ख बस्ती में,
हर मसीहा सिपहसालार हुआ जाता है।

फ़िक्र इतनी है कि आनेवाले कल का,
हर सिपाही गुमराह हुआ जाता है।

8

चिराग खोजते क्यों हो चिराग बन जाओ।
हवा अनुकूल है यारो कि आग बन जाओ॥

खयालों की ख़ुशबू से खेलना छोड़ो अब तो,
धूल से उट्ठो मिलकर पराग बन जाओ।

पेट खाली है यह किस्मत नहीं है साजिश है,
अकेले न रहो आग के दरिया का भाग बन जाओ।

और कब तक करोगे आरज़ू करिश्मा की,
मसीहा न बनो कौम का सुहाग बन जाओ।

इन कुर्सी नशीं ख़ुदाओं की खुराफात समझो,
भूल ऐसी न करो तारीख-ए-दाग बन जाओ।

9

अंधेरी रात की साँसें ग़ज़ल नहीं होती।
भीड़ के जोश की कोई शकल नहीं होती।

नक़ाब खोलकर माँगें हिसाब वर्षों का,
भूख के गाँव में इतनी अकल नहीं होती।

अजीब बात है कि धूल को मिटाने की,
साजिशें वक़्त की हरदम सफल नहीं होती।

बंद होता नहीं इतिहास गली कूचों में,
धूप में धूल की पीड़ा विफल नहीं होती।

10

भट्टियों में आज लोहा गल रहा है।
नये युग का नया सूरज ढल रहा है॥

समझते हो प्रेत वे परछाइयाँ हैं,
समय की गति में हिमालय गल रहा है।

सख्त कितनी भी रहे जंजीर टूटेगी सही,
नाभिकीय विखण्डना का चक्र पूरा चल रहा है।

वंचना में द्वन्द ही शाश्वत नियम है,
मत बुझाओ आसमाँ जो जल रहा है।

किस तरह लावा करोगे बंद मुट्ठी में,
बंदिशों के टूटने का वक़्त पांसा चल रहा है।

11

उग रही है घास घोड़े चर रहे हैं।
गनीमत है लोग कुछ तो कर रहे हैं॥

एक झोंके भर भले देखो कहीं मुट्ठी तनी हो,
लोग अब भी आँधियों से डर रहे हैं।

लीपकर सारी इबारत युग पुरुष,
हाशिए पर दस्तखत भर कर रहे हैं।

तुम न मानोगे मगर सच है यही,
रहे मरघट इसलिए हम मर रहे हैं।

कौन रोटी, कौन टोपी, कौन देहली छीन ले,
अमुक वर्षों से इसी का फैसला हम कर रहे हैं।

12

जंग लड़नी है हमें यह जंग है इंसान की।
अब न वादों से बुझेगी भूख यह इंसान की॥

हवा में रहकर हक़ीक़त सामने आती नहीं,
राश आयेगी तुम्हें कैसे हवा स्मशान की।

और कब तक मजहबी ये जहर बाँटोगे भला,
आज हम पहचानते हैं सूरतें शैतान की।

सियासत के मूल्य अब तो नियत करने ही पड़ेंगे,
अब जरूरत है हरेक देवत्व की पहचान की।

पेट भूखा बदन नंगा किसकी यह तस्वीर है,
गौर से देखो यही है शक्ल हिन्दुस्तान की

13

थक गए हैं धूल में लेते हुए हम श्वांस।
वंचना का रोज विस्तृत हो रहा आकाश॥

बेचने को और क्या बाकी रहा है पास,
बिक चुका हर ओठ का बिखरा हुआ मधुमास।

हर नया मौसम बदलता जा रहा क्यों बात,
झूठ को अंकित करे कब तक भला इतिहास।

राजनीति, अनीति का क्यों हो गयी पर्याय,
सहें कब तक मौत पर यह मसीही उपहास।

बहस रोटी पर, नहीं है भूख का उपचार,
कफ़न भर इस ज़िन्दगी का क्या करें विश्वास।

रोज़ बढ़ता ही गया है हर सुबह का ताप,
जल रहे आकाश से क्या रौशनी की आस।

14

तेज कितनी धूप है यह और पारे की नदी है।
फाइलों में बंद जैसे एक पत्थर की सदी है॥

दिशाओं में शोर है जड़ हो चुकी सबकी प्रतीक्षा,
खाइयाँ बदलाव की हर शख्स को खुद खोदनी है।

पीढियों को सौंपते आए समय की जाह्नवी को,
मौसमों से अपरिचिय अपने समय की त्रासदी है।

अनिर्णय की छा रही आकाश सी मुर्दानगी में,
है अभी इंसान ज़िंदा, मानते हो यह ख़ुशी है।

प्रोढता ढकती रही है युवा संकल्पनाओं को,
समझदारी की हमारी बस यही परिणिति रही है।

15

यक़ीनन यह रास्ता मंज़िल तलक जाता तो है।
हर छलावे का वचन इस राह पर आता तो है॥

अंत तक चलना कठिन है राह पर इंसाफ की,
ख़ुशनसीबी है कि इतना ख्याल तक आता तो है।

बंदिशों की बात क्या संकल्प ही निर्बल रहा,
राज इस भटकाव का कुछ कुछ समझ आता तो है।

शिखर पर पहुंचोगे तुम आखिर हमारी सीढ़ियों से,
विवशता का ही भले पर हमसे वह नाता तो है।

पलटते इतिहास में बन लो मसीहा आज तुम,
पर नया पन्ना तुम्हारी मौत दिखलाता तो है।

जंगलों से निकलकर पगडंडियाँ खोती रही हैं,
ज़िन्दगी का राजपथ यह सत्य दर्शाता तो है।

16

अपनी ये मेहरबानियाँ अब बस भी कीजिए।
संजीवनी अगर कहीं पे हो तो दीजिए॥

ख़ुशफहमियों में खो लिए हैं एक उम्र तक,
अपनी जमीन पर हमें रहने तो दीजिए।

सदियाँ तो बदलती रहेंगी तुम रहो न हम,
कल भोर पर फिलहाल तो कुछ गौर कीजिए।

हर मोड़ पर पर्दों पे कुछ अंकों की नुमाइश,
मानव, मशीन में हुजूर फर्क कीजिए।

दिल औ' दिमाग की तो बहुत छानबीन है,
लाज़िम है पहले पेट की तफ्तीश कीजिए।

तकरीरे फिलसफी है तुम्हारे लिए शगल,
सीधी लकीर पर हमें चलने तो दीजिए।

देते रहेंगे आप तो हर दिन नया बयान,
हाजिर हक़ीक़तों की भी कुछ बात कीजिए।

17

हमको तो धूल धूंध धुआँ जो मिला मिले।
उगती हुई इस पौध को ताजा हवा मिले॥

इस शहर में पण्डित हैं, भिखारी हैं, ख़ुदा हैं,
मुमकिन नहीं है अब यहाँ कोई दिया जले।

सूरज की परख क्या करें अंधों के गाँव में,
बेहतर है इस बिरादरी से बेज़ुबां मिलें।

रंग रोगनों की फ़िक्र है अपने मकान की,
तय है कि हमें मंजिलों से फासला मिले।

अपने सफ़र का एक ही मकसद है दोस्तो,
जो कारवाँ चलेंगे उन्हें कुछ निशां मिलें।

शहनाइयों में दब न जाए बेबसी की चीख,
मज़लूम की जेहाद का कुछ सिलसिला चले।

18

सब लिख दिया है कायदे की इस किताब में।
हर एक गुनाह की है सजा इस किताब में॥

चलने न देंगे जुल्म की फ़ितरत किसी तरह,
पर क्या करें होते हैं कुछ काँटे गुलाब में।

इस मुल्क के मस्तिष्क ने लिक्खी है यह किताब,
करते हैं पर ज़हीन भी भूलें हिसाब में।

हम दे चुके हैं घास और घोड़े को आज़ादी,
मिलकर रहो, रक्खा है क्या जी इंकलाब में।

कानून की नज़र भला पहुंचे तो किस तरह,
करते हैं चंद लोग जो साजिश नक़ाब में।

चाहो तो बदल देंगे ये साकी ये पैमाना,
रद्दोबदल करें भला कैसे शराब में।

19

गुमशुदा लोग जो लौट के घर आते हैं।
आजकल बहुत ही मायूस नज़र आते हैं॥

बात क्या है कि हरेक जुंबिशे ख़ुशहाली में,
चंद उजड़े हुए घर और नज़र आते हैं।

गाँव मेरा तो शहर हो न सका, खैर हुई,
शहरी तहज़ीब के नासूर नज़र आते हैं।

बहुत नजदीक के रिश्तों की फसल बिगड़ी है,
अब तो अपने भी सब जासूस नज़र आते हैं।

हरेक आँगन में सियासत की जड़ें देखी हैं,
प्यार के रिश्तों के ताबूत नज़र आते हैं।

20

देखी होगी किसीने खिली चाँदनी।
मैं ने देखी भटकती हुई चाँदनी॥

भाँवरों की अगन करने सौदा लगी,
मैं ने देखी सिसकती हुई चाँदनी।

आज मेरे तुम्हारे गुनाह के लिए,
मैं ने देखी बिलखती हुई चाँदनी।

शूल दिनभर उगाये उन्हीं में अरे,
रात देखी उलझती हुई चाँदनी।

ज़िन्दगी के गुणा-भाग करते हुए,
ना तुम्हारी, न मेरी हुई चाँदनी।

21

ज़िन्दगी के हलफनामे खुदकुशी साबित हुए।
सिद्धियों के हार मेरी बेबसी साबित हुए॥

बर्फ तो पिघली मगर रसधार गंगा बन न पाई,
किनारे मेरे लिए मरुभूमि ही साबित हुए।

बुलंदी की सूचियां बनने लगीं इंसान की,
जेहन के पर्चे हमारे मुफलिसी साबित हुए।

उजड़ने का ग़म नहीं, फसलें जिन्हें थीं सौंपनी,
वही फसलों के लिए खारी नदी साबित हुए।

हम, हमारा घर, हमारे लोग तक चिंता रही,
सिद्धियों के स्वप्न हमको त्रासदी साबित हुए।

ग़लत हाथों में मसालें थाम कर चलते रहे,
इसलिए संकल्प पत्थर की सदी साबित हुए।

22

आइना शहर भर घूमा तलाश किसकी है।
कत्ल मेरा हुआ था फिर ये लाश किसकी है॥

मौसमे जश्न गर होता न तो कुछ बात भी थी,
लोग मस्ती में हैं फिर भी निश्वास किसकी है।

मुक्त आकाश है धरती की बात ही क्या है,
भीड़ मेलों सी है, उखड़ी सी श्वास किसकी है।

जीत की खबर के पर्चे तो रोज छपते हैं,
जाम छलके हुए हैं फिर ये प्यास किसकी है।

सौंप के घर उन्हें परखे बगैर सो जो गये,
गुनाह अपना था आखिर तलाश किसकी है।

घटाओं से कभी तुमने हिसाब माँगा था,
भरोसा बाजुओं पर था तो आश किसकी है।

23

खेल के उपक्रम बनाए जा रहे हैं।
चीथड़े फिर से सजाए जा रहे हैं॥

नीर क्षीर विवेक का निर्णय करें,
हँस कुछ बगुले बताए जा रहे हैं।

बदलते माहौल में चन्दन लगा,
ठीकरे पारस बताए जा रहे हैं।

आग चूल्हे की जलाने के लिए,
गौर प्रभु फिर से बुलाए जा रहे हैं।

धूप आँगन में न आए इसलिए,
कैक्टस घर में सजाये जा रहे हैं।

रोज़ झण्डे बदलने वाले कुशल,
फौज में भर्ती कराए जा रहे हैं।

बबूलों की फसल ढकने के लिए,
युग चरण हर दिन मिटाए जा रहे हैं।

मूर्खता जायज बताने के लिए,
युग पुरुष जाहिल बताए जा रहे हैं।

24

आस्थाएं भी वकालत हो गई हैं।
देश की माटी तिजारत हो गई है॥

जी हुजूरों की पनपती नस्ल में,
साफगोई भी हिमाकत हो गई है।

शक्ति पैसे की बढ़ी है इस क़दर,
रूप की मंडी सियासत हो गई है।

इस तरह फसलें विचारों की उगी हैं,
यज्ञ की वेदी जियाफत हो गई है।

हर प्रहर में मूल्य बदले जा रहे हैं,
वक्त की चेरी शराफ़त हो गई है।

न्याय, तप, बलिदान सेवा मर चुके हैं,
साधना कोरी नफासत हो गई है।

25

यज्ञ समिधा से मुझे दुर्गंध सी आती है क्यों।
आरती के दीप की लौ भी जलाती सी है क्यों॥

घर बसाने के सभी प्रतिमान तो परखे हुए थे,
भीड़ अपनों की मुझे लगती बराती सी है क्यों।

चंद सिक्कों के सिवा उपलब्धि क्या है ज़िन्दगी की,
आज हर मन की व्यथा की धार बरसाती है क्यों।

मंत्र अपना गलत था या साधना में थी कमी,
उग रहीं फसलें सभी विष वेल बन जाती हैं क्यों।

हम अगर संतान अमृत की हमारी माँ वही है,
फिर हमारी चेतना की बुझ रही बाती है क्यों।

आज तय करना पड़ेगा हम कहाँ भटके सफ़र में,
एक युग भर की तपस्या व्यर्थ सी जाती है क्यों।

आज पूजा घर हमारा राजधानी बन गया है,
प्रश्न क्यों फिर, ज्योति की लौ थरथराती सी है क्यों।

26

किनारे पर खड़ा हो मझधार में बहता नहीं हूँ।
थपेड़ों से अलग अब धार में बहता नहीं हूँ॥

बड़ा बनकर किसी अपनत्व को चाहूँ भला क्यों,
किसी आहत हृदय की धड़कनें सुनता नहीं हूँ।

राजमार्गो पर खड़े हो पगडंडियों से प्यार कैसा,
निजी घाटे का सतत व्यापार अब करता नहीं हूँ।

कभी सूरज की चाह थी अंधेरा अपना मिटाने को,
एक छोटे द्वीप की मनुहार अब करता नहीं हूँ।

कभी मीरा, निराला थे हमारे राग का स्वर,
पुरस्कारों की दौड़ में सत्कार अब करता नहीं हूँ।

वसंती है हवा पतझार आकर क्या करेगा,
लिखूं कैसे गीत अब आग में जलता नहीं हूँ।

27

बस्तियाँ जल रही थी हम तमाशबीन थे।
साजिशों के लिखे अक्षर बहुत महीन थे॥

लोग दीवालों पर लिखा पढ़ लेते हैं,
हमारे पास न खुर्दबीन थे न दूरबीन थे।

चौबिसों घंटे हम खड़े थे फ़र्ज़ से जकड़े,
हम तो व्यवस्था के पुर्जे थे मशीन थे।

तफतीश हम करें या हमारी तफतीश हो,
हमलावर हमसे भी शातिर थे ज़हीन थे।

दृष्टि संजय सी हमें व्यास ने दी ही नहीं,
हमारे कृष्ण भी कुर्सीनशीं थे, गमगीन थे।

अब तक गौरी गज़नबी गांधी बन गए होंगे,
हमारे चाणक्यों को कुछ ऐसे यकीन थे।

दूर तक जाती है परछाइयां सुबह शाम,
कोई बरदाई होता पृथ्वीराज दृष्टि हीन थे।

धृतराष्ट्र और जयचंदों की इस बस्ती में,
भीष्म, द्रोण, कर्ण कापुरुष थे बलहीन थे।

28

गैर मुमकिन को मुमकिन मैं बना दूँ कैसे।
बह चुकी उम्र को वापिस मैं बुला लूँ कैसे॥

ज़िन्दगी माँगकर मिल जाए भीख ही होगी,
दान के पात्र को उपलब्धि बना लूँ कैसे।

फूल भी अब तो ज़रूरत के कहे खिलते हैं,
किसी जज़्बात को ज़रूरत मैं बना लूँ कैसे।

मुझे क्षण चाहिए, तुमको उम्र भर का हिसाब,
क्षण के एहसास को इतिहास बना लूँ कैसे।

तुम्हें मंजूर नहीं है ये सिलसिला अपना,
अकेले हाथ से ताली मैं बजा लूँ कैसे।

स्वार्थ, अपनत्व के झगड़े ने घर उजाड़ दिया,
कोई अपना न हो तो घर बसा लूँ कैसे।

मैं अंधेरे में भी तय अपना सफ़र कर लेता,
तुम्हें चलना है अभी शमाँ बुझा दूँ कैसे।

29

कल मुझे इतिहास का पन्ना मिला था।
एक मेरा नाम भी उसमें लिखा था॥

मंदिरों के शीश पर सोना चढ़ाया,
गर्भगृह में बेतहाशा सा धुँआ था।

देवता की मूर्ति का श्रृंगार सोना,
आरती का दीप माटी का बना था।

खेत में थी जेठ की तपती दुपहरी,
चौक में चौपाल में भादों खड़ा था।

चाहता था मोल लेना मैं खुदी को,
विश्व का बाज़ार यंत्रों से भरा था।

और जब विश्रांत हो खोजा बसेरा,
आँधियों में वक़्त खोया सा मिला था।

दौर ने जब भी निजी पहचान चाही,
राख के अंबार से ही मैं घिरा था।

30

आग का सैलाब देखा खोल जो भी द्वार देखा।
पत्थरों के इस शहर में प्यार का व्यापार देखा॥

प्रौढ़ होते मूल्य माँगा जा रहा वात्सल्य का,
चंद सिक्कों में पलटते दूध का अधिकार देखा।

रही होगी कभी राखी ज़िन्दगी से बेशकीमत,
राखियों का पद, प्रतिष्ठा से जुड़ा आकार देखा।

वंशजों के लिए जीवन भर छला अपनी नियति को,
पाँव थकते उन्हीं में अपमान पारावार देखा।

दोस्तों की महफिलें तब तक रही जब तक समय था,
शाम ढलते अजनबी व्यवहार का संसार देखा।

दक्षिणा है माप अब तो शिष्य की औक़ात का,
ज्ञान मंदिर में पनपता देह का व्यापार देखा।

जो न अपने थे, जिन्हें इंसान माना ही नहीं था,
बस उन्हीं मज़लूम लोगों में उमड़ता प्यार देखा।

लेखक परिचय

कृष्णपालसिंह भदौरिया

M. : 9426028100

- 1945 में मध्यप्रदेश के भिण्ड जिले के चिलौंगा गाँव में जन्म।
- शिक्षा : एम.ए. एम.एड.
- 1966 से 2001 तक शेठ सी.एल. हिन्दी उच्च माध्यमिक विद्यालय अहमदाबाद में शिक्षक-आचार्य के रूप में सेवा।
- 1957 से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयंसेवक।
- 2001 से 2010 तक विश्व संवाद केन्द्र - गुजरात (अहमदाबाद) में संपादक।
- 1994 से 2000 तक भाजपा कर्णावती महानगर, कार्यकारिणी सदस्य।
- 1995 से 2001 तक महानगर निगम अहमदाबाद की नगर प्राथमिक शिक्षण समिति का राज्य नियुक्त सदस्य।
- 2011 से विश्व हिन्दू परिषद में कार्यरत।
- 2017 से धर्म प्रसार आयाम में केन्द्रीय मंत्री, प्रचार प्रमुख तथा धर्म संवाद (मासिक) का संपादन।

प्रकाशन :-

- चांदनी के नाम (गीत संग्रह)
- नया पथ्य (काव्य संग्रह)
- तुलसी के राम
- पिछले प्रहर में (गीत संग्रह)
- पत्थर की सदी (नव गीत संग्रह)
- पुराण : भारतीय इतिहास और संस्कृति का विश्वकोश

:: प्रकाशक ::

साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट

ए-१०५, शिव तत्त्वनिधि, आश्रम महादेव-१ के पास,
केनरा बैंक के सामने, वस्त्राल, अहमदाबाद-३८२४१८.